E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
Impact Factor: 6.49
https://multiresearchjournal.theviews.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 30-34

Special Issue of International Conference (10 December 2025)
On the Topic
Human Rights and Education
By
Faculty of Education, Faculty of Arts and Social Sciences, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

[1]बबीता राजपूत एवं [2]डॉ. भावना सोनेजी

[1]शोधार्थी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2]प्राचार्य, राधा कृष्णनन शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20544560

Corresponding Author: बबीता राजपूत

Abstract
पाठ्य सहगामी क्रियाएँ से तात्पर्य उन शैक्षिक क्रियाओं से है जो पाठ्यक्रम के साथ–साथ विद्यालय में संचालित की जाती है। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास में सहायक होती है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विद्यालयों में छात्रों के लिए होना अत्यंत आवश्यक है। छात्र इन्हीं के द्वारा अपनी प्रतिभा को सभी के सामने ला पाते है और उन्हे विकसित कर पाते है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव देखना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जबलपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले व भाग नहीं लेने वाले 600 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया फिर इन छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना की गई। परिणाम स्वरूप पाया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले व पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाली छात्राओं व विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलबिध में महत्वपूर्ण अंतर प्राप्त हुआ है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले छात्राओं व विद्यार्थियों की शौक्षणिक उपलब्धि का स्तर भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से अधिक प्राप्त हुआ है। जबकि बालक छात्रों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का कोई प्रभाव नही पाया गया।

Keywords: पाठ्य सहगामी क्रियाएं, शैक्षणिक उपलब्धि

Introduction
शिक्षा मानव जीवन के विकास की एक सतत् प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रहती, अपितु उसके व्यक्तित्व के विविध आयामों को विकसित करने का कार्य भी करती है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर करती है, क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति को सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक रूप से परिपक्व बनाती है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करना नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना भी शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य बन गया है। इसी कारण आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में उन गतिविधियों को भी विशेष महत्व दिया जाने लगा है, जो विद्यार्थियों की रचनात्मकता, सामाजिकता, नेतृत्व क्षमता एवं व्यक्तित्व विकास में सहायक हों। विद्यालय शिक्षा का ऐसा केन्द्र है, जहाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। विद्यालय में विद्यार्थियों को पाठ्यज्ञान के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की क्रियात्मक एवं सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्राप्त होते हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन, सहयोग, सहनशीलता एवं उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करती हैं। इन्हीं गतिविधियों को सामान्यतः पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के रूप में जाना जाता है। पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ शिक्षा की प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली एवं उद्देश्यपूर्ण बनाती हैं तथा विद्यार्थियों की अंतर्निहित प्रतिभाओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भाषण, वाद–विवाद, नाटक, संगीत, चित्रकला, विज्ञान प्रदर्शनी, एन.सी. सी., स्काउट–गाइड, सामाजिक सेवा कार्यक्रम एवं साहित्यिक गतिविधियाँ आदि सम्मिलित होती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी रुचियों एवं क्षमताओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही, वे समूह में कार्य करना, नेतृत्व करना तथा सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन स्थापित करना सीखते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ विद्यार्थियों में आत्म–अनुशासन एवं समय–प्रबंधन की भावना विकसित करती हैं, जिसका प्रभाव उनके अध्ययन एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर भी पड़ता है।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों पर शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा का दबाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने की होड़ के कारण अनेक विद्यार्थी मानसिक तनाव एवं चिंता का अनुभव करते हैं। ऐसी स्थिति में पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों को मानसिक संतुलन बनाए रखने एवं उनकी सृजनात्मक ऊर्जा को सकारात्मक दिशा प्रदान करने का कार्य करती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि आत्म–अभिव्यक्ति एवं सामाजिक सहभागिता का अवसर भी प्राप्त होता है। इससे उनमें आत्मविश्वास एवं आत्म–संतोष की भावना विकसित होती है, जो उनके शैक्षणिक जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है।

शिक्षाविदों का मत है कि शिक्षा तभी सार्थक मानी जा सकती है, जब वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करे। केवल पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए पूर्णतः तैयार नहीं कर सकती। पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के अनुभव प्रदान करती हैं तथा उनमें नेतृत्व क्षमता, सहयोग भावना एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती हैं। यही कारण है कि वर्तमान शिक्षा नीतियों एवं शैक्षिक कार्यक्रमों में भी पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को विशेष महत्व प्रदान किया जा रहा है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण होता है। इसी स्तर पर विद्यार्थियों में भविष्य के प्रति गंभीरता एवं प्रतिस्पर्धात्मक भावना विकसित होने लगती है। इस अवस्था में उनकी रुचियाँ, क्षमताएँ एवं व्यक्तित्व अधिक स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालयों में ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए, जहाँ विद्यार्थियों को अध्ययन के साथ–साथ अपनी प्रतिभाओं के विकास के लिए भी पर्याप्त अवसर प्राप्त हों। पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को संतुलित रूप से आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि को सामान्यतः विद्यार्थियों के अध्ययन स्तर एवं परीक्षा परिणामों के आधार पर मापा जाता है। किसी विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि केवल उसकी बुद्धि या अध्ययन समय पर निर्भर नहीं करती, बल्कि अनेक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारक भी उसे प्रभावित करते हैं। पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में सहभागिता विद्यार्थियों में नियमितता, आत्म–नियंत्रण, समय–प्रबंधन एवं अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकती है, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि होने की संभावना रहती है। दूसरी ओर, कुछ लोगों का यह भी मत है कि इन गतिविधियों में अत्यधिक सहभागिता विद्यार्थियों के अध्ययन समय को प्रभावित कर सकती है। अतः पाठ्य–सहगामी क्रियाओं एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है, परंतु यह प्रश्न अभी भी विचारणीय है कि इन गतिविधियों का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर वास्तविक प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। क्या पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में सक्रिय सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होती है? क्या छात्र एवं छात्राओं में इसके प्रभाव में कोई भिन्नता पाई जाती है? क्या विद्यालयीय वातावरण एवं उपलब्ध सुविधाएँ पाठ्य–सहगामी क्रियाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं?

इन्हीं प्रश्नों की पृष्ठभूमि एवं उनकी वैज्ञानिक जाँच की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध विषय – "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन" का चयन किया गया है।

उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

चरः प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित चर लिये गये हैं –
स्वतंत्र चर – पाठ्य सहगामी क्रियाएं (बालसभा गतिविधि)
आश्रित चर – शैक्षणिक उपलब्धि

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु शासकीय विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जाएगा तथा यादृच्छिक विधि से 10 विद्यालयों से 600 विद्यार्थियों (300 ग्रामीण बालक तथा बालिका एवं 300 शहरी बालक तथा बालिका) का चयन निम्नानुसार किया गया –

सारणी 1: बालिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जाएगा तथा यादृच्छिक विधि से 10 विद्यालयों से 600 विद्यार्थियों (300 ग्रामीण बालक तथा बालिका एवं 300 शहरी बालक तथा बालिका

क्रमांक	विद्यालय का क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या		कुल
		बालक	बालिका	
1	शहरी	150	150	300
2	ग्रामीण	150	150	300
कुल		300	300	600

शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोधकार्य में आंकड़ों के संग्रह हेतु निम्न उपकरण का उपयोग किया गया हैं –

1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं (बाल सभा गतिविधि) में भाग लेने वाले बालक एवं बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांक।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा शोध विधि हेतु सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि – प्रस्तुत शोध में परिणामों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की गणना की गई है।

परिणमोां का विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक. –2: शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सारणी 2: शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव संबंधी परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थी	134	60.22	11.80	1.75	> 0.05
पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थी	169	57.56	14.53		

स्वतंत्रता के अंश – 301

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान –1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान –2.59

सारणी क्रमांक 2 के अवलोकन से विदित है कि शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्यमान व मानक विचलन 60.22 व 11. 80 प्राप्त हुए हैं जबकि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान व मानक विचिलन क्रमशः 57.56 व 14.53 प्राप्त हुए हैं, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में मामूली अंतर है व दोनो समूह के प्राप्ताकों में असमान विचलनशीलता है।

दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात का मान 1.75 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित आवश्यक मान 1.97 से कम है दोनों समूह के मध्य सार्थक अंतर नहीं है परिकल्पना 01 अस्वीकृत की जाती है।

अतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं होता है।

परिकल्पना क्रमांक. –3: ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सारणी 3: ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव संबंधी परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थी	197	64ण्46	9ण्38	11ण्08	ढ 0ण्01
पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थी	163	54ण्44	7ण्79		

स्वतंत्रता के अंश – 358

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान –1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान –2.59

सारणी क्रमांक 3 के अवलोकन से विदित है कि ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांको के मध्यमान व मानक विचलन 64.46 व 9. 38 प्राप्त हुए हैं जबकि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान व मानक विचिलन क्रमशः 54.44 व 7.79 प्राप्त हुए हैं, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर है व दोनो समूह के प्राप्ताकों में असमान विचलनशीलता है।

दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात का मान 11.08 प्राप्त हुआ है जो 0.01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित आवश्यक मान 2.59 से अधिक है दोनों समूह के मध्य सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है अतः परिकल्पना 02 स्वीकृत की जाती है।

अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव प्राप्त हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से अधिक प्राप्त हुई है।

परिकल्पना क्रमांक –4: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सारणी 4: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव संबंधी परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थी	331	62ण्74	10ण्62	7ण्70	ढ 0ण्01
पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थी	332	56ण्03	11ण्80		

स्वतंत्रता के अंश – 661

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान –1.96
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान –2.59

सारणी क्रमांक 4 के अवलोकन से विदित है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 62.74 व 10.62 प्राप्त हुए हैं जबकि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान व मानक विचिलन क्रमशः 56.03 व 11.80 प्राप्त हुए हैं, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर है व दोनो समूह के प्राप्ताकों में असमान विचलनशीलता है।

दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात का मान 7.70 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित आवश्यक मान 2.59 से अधिक है दोनों समूह के मध्य सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है परिकल्पना 03 स्वीकृत की जाती है।

अतः कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव प्राप्त हुआ है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से अधिक प्राप्त हुई है।

परिणामों की व्याख्या

शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं प्राप्त हुआ है (संदर्भ सारणी 2)। इसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि बालसभा गतिविधियों का संचालन प्रायः औपचारिकता निभाने तक ही सीमित रहता है, जिससे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और उनमें निहित प्रतिभा को विकसित करने का अवसर नहीं मिल पाता। विद्यालयों में इन गतिविधियों के आयोजन के लिए पर्याप्त समय और संसाधन उपलब्ध नहीं होते, परिणामस्वरूप छात्रों का ध्यान मुख्य रूप से परीक्षा–केंद्रित शिक्षा और अंकों पर केंद्रित रहता है। शहरी छात्रों के लिए अतिरिक्त कोचिंग, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा तकनीकी साधनों पर अधिक जोर होने के कारण वे बालसभा जैसी गतिविधियों को गंभीरता से नहीं लेते। कई बार शिक्षक भी इन क्रियाओं को केवल सहगामी गतिविधि मानते हुए उसमें शैक्षणिक उद्देश्यों का समुचित समावेश नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप, इन गतिविधियों और शैक्षणिक उपलब्धियों के बीच सीधा और स्पष्ट संबंध सामने नहीं आ पाता। इस प्रकार, बालसभा गतिविधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक होते हुए भी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव नहीं डाल पातीं। हिंमांशु वल्लभदास (2011) के शोध परिणाम भी उपरोक्त परिणामों का समर्थन करते हैं। इन्होनें ने भी अपने शोध में पाया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विद्यार्थियों की उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। थॉम्पसन तथा ऑस्टिन (2003) ने भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त किये और पाया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं तथा उच्च प्राप्तांकों के मध्य कोई विशेष प्रकार का संबंध नहीं होता है। जबकि श्रीवास्तव, श्यामसुन्दर (2021) ने उपरोक्त परिणामों के विपरीत परिणाम प्राप्त किये इन्होंने पाया कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव प्राप्त हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) में भाग लेने विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों, छात्राओं व विद्यार्थियों से अधिक प्राप्त हुई है। (संदर्भ सारणी क्रमांक 3)। इसी प्रकार उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों (शहरी एवं ग्रामीण) में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उत्थान पर सकारात्मक प्रभाव प्राप्त हुआ है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं (बालसभा गतिविधि) में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से अधिक प्राप्त हुई है (संदर्भ सारणी क्रमांक 4)। रेणु (2017) के शोध परिणाम भी वर्तमान शोध का परिणामों समर्थन करते हैं इन्होनें ने भी पाया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थी, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से शैक्षणिक योग्यता में आगे हैं। पूराराम मेघवाल (2016) के शोध परिणाम भी इन परिणामों का समर्थन करते हैं। इनके अनुसार भी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक सन्तुष्टि उच्च स्तर की पायी गयी। जाहिद बशीर (2011) ने भी पाया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ने में सक्रिय योगदान मिलता है। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण परिवेश में ऐसे अवसर अपेक्षाकृत सीमित होते हैं, इसलिए जब विद्यालय में बालसभा जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं तो विद्यार्थी उसमें उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। इन गतिविधियों से उन्हें आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति क्षमता, नेतृत्व कौशल तथा सहयोग की भावना विकसित करने का अवसर मिलता है। साथ ही, ग्रामीण छात्र–छात्राओं के लिए यह मंच अपने विचार रखने और प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन जाता है, जिससे उनका विद्यालय से लगाव बढ़ता है और अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। परिणामस्वरूप, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थी न केवल व्यक्तित्व विकास में बल्कि शैक्षणिक उपलब्धियों में भी बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं।

संदर्भ

1. पाठक, पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर इक्यावनवा संशोधित संस्करण।, 2010.
2. रॉय, पी. एन. अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मी नारायण पब्लिकेशन।, 2007.
3. सरीन एवं सरीन, शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।, 2008.

4. सिंह ए. के. मनोविज्ञान समाज शास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास दसवां संशोधित संस्करण।, 2012.
5. शर्मा आर. ए. शिक्षा अनुसंधान, मेरठ : लाल बुक डिपो, संस्करण 2012–2013।
6. शर्मा ए. सामाजिक विज्ञान शिक्षण, आगरा : एच. पी. भार्गव बुक हाउस।, 2006.
7. ऑनुओहा सी. पी, गार्नर एम. पी., एवं फेन, एन. ई. सहगामी क्रियाओं के प्रति विद्यार्थियों की धारणा एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव. करंट्स इन फार्मेसी टीचिंग एंड लर्निंग, 2021;13(4):233–242.
8. अरोरा, राहुल. नाट्य गतिविधियों के माध्यम से आत्म–सम्मान एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार का अध्ययन. जर्नल ऑफ चाइल्ड डेवलपमेंट स्टडीज. 2021;12(3):22–30.
9. चौरसिया, कविता. डिजिटल सहगामी गतिविधियाँ और शैक्षणिक उपलब्धि का सहसंबंध. आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान समीक्षा. 2023;15(1):54–63.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.